प्रश्नः

‘‘क्या कलीसिया के लिए कोई नमूना दिया गया है?’’

उत्तरः

विद्वान प्रचारकों ने यह दावा करके कि नये नियम की पत्रियां ‘‘प्रेम पत्रों का संग्रह’’ ही हैं ‘‘और प्रेम पत्रों में कोई नियम नहीं होता’’ जवानों को ही नहीं बल्कि कुछ बूढ़े लोगों को भी गुमराह किया है। सचमुच प्रेम पूरे नये नियम को पैंदी से बांधकर पसर जाता है, परन्तु आशीष यह केवल उनके लिए देता है जो किसी विशेष ‘‘नियम’’ (यू.: *kanon;* गलतियों 6:16) के अनुसार चलते हैं।

कुछ लोगों का कहना है कि ‘‘प्रेम पत्रों में कोई नियम नहीं होता,’’ जबकि नये नियम के प्रेम पत्र ‘‘मसीह की व्यवस्था’’ (गलातियों 6:2) पर आधारित हैं।

कुछ लोगों का मानना है कि, ‘‘हमें प्रेम तो करना चाहिए पर किसी शिक्षा को नहीं मानना चाहिए।’’ परन्तु परमेश्वर की प्रेरणा से एक व्यक्ति ने जवान प्रचारक को ‘‘पढ़ने,’’ और ‘‘उपदेश,’’ ‘‘सिखाने’’ और ‘‘उन बातों’’ को ‘‘सोचता’’ रहने और उन पर ‘‘अपना ध्यान लगाए’’ रखने के लिए लिखा ‘‘क्योंकि यदि ऐसा करता रहेगा, तो तू अपने, और अपने सुनने वालों के लिए भी उद्धार का कारण होगा’’ (1 तीमुथियुस 4:13, 16)।

कुछ लोग नमूना होने के विचार का मज़ाक उड़ाते हैं। परन्तु एक दर्जी के लिए नई पोशाक बनाने के लिए नमूना सहायक सिद्ध होता है। वर्णमाला सीखने वाला एक स्कूली बच्चा, अपने शिक्षक द्वारा दिए गए नमूने की नकल करता है। यीशु एक ‘‘आदर्श’’ दे गया है, कि मसीही लोग ‘‘उसके चिह्न पर चलें’’ (1 पतरस 2:21)।

पुराने नियम में परमेश्वर द्वारा दिए गए नमूने

कुछ आधुनिक प्रचारकों द्वारा ‘‘पैटर्न थियोलोजी’’ के रूप में पुराने प्रचारकों की नहीं बल्कि परमेश्वर की निन्दा की गई है। परमेश्वर ने हाबिल के समय तक आराधना का एक नमूना दे दिया था। क्योंकि हाबिल ने विश्वास से बलिदान भेंट किए थे (इब्रानियों 11:4)

और विश्वास वचन को सुनने से आता है (रोमियों 10:17) इसलिए यह स्पष्ट है कि परमेश्वर ने वनस्पति की नहीं बल्कि पशुओं की भेंटें लाने के लिए कहा था (उत्पत्ति 4:4)।

पशु और लहू की भेंटों के नमूने की शुरुआत इस तरह हुई और नूह, अब्राहम, इसहाक और याकूब इसका पालन करते रहे (उत्पत्ति 8:20; 12:7, 8; 26:23–25; 31:54)। इस्राएल के साथ बांधी गई मूसा की वाचा में लहू के बलिदान आवश्यक थे (लैव्यव्यवस्था 16:1–34)। यीशु के लिए एक मानवीय ''देह'' तैयार किए जाने पर इस सिस्टम का चरम आया ताकि ''अपने ही लहू के द्वारा'' वह मेमना बने ''जो जगत का पाप उठा ले जाता है'' (यूहन्ना 1:29; इब्रानियों 9:12; 10:5)।

नूह को जहाज़ बनाने के लिए लकड़ी की किस्म, आकार, मंजिलों, खिड़की और दूसरे सारे निर्देश परमेश्वर ने ही दिए थे। नूह के काम की सराहना की गई थी क्योंकि उसने उस नमूने का पालन किया था (उत्पत्ति 6:14–16, 22)। तम्बू बनाते समय मूसा ने परमेश्वर द्वारा उसे पहाड़ पर दिए ''नमूने'' (इब्रानी में *tabhnith* और यूनानी में *tupos*) के बगैर काम नहीं किया था (निर्गमन 25:9, 40; 26:30; इब्रानियों 8:5)।

इसी प्रकार, प्रभु ने ''आत्मा के द्वारा,'' दाऊद को मन्दिर के लिए एक नक़्शा दिया था (1 इतिहास 28:12)। दाऊद ने कहा, ''मैंने यहोवा की शक्ति से जो मुझको मिली, यह सब कुछ बूझकर लिख दिया है'' (1 इतिहास 28:19)।

दाऊद को स्वयं तो मन्दिर बनाने की अनुमति नहीं मिली थी, लेकिन उसने कहा कि ''मैंने तो अपनी शक्ति भर'' इसके लिए ''इकट्ठा किया'' (1 इतिहास 29:2)। अपने पुत्र सुलैमान को नक़्शा देने से पहले उसने ''खदान पर तैयार किए गए'' पत्थर सौंप दिए (1 इतिहास 28:11; 1 राजा 6:7)। सुलैमान ने उस नमूने के अनुसार इतनी सावधानी से काम किया कि ''भवन के बनते समय हथौड़े वसूली या और किसी प्रकार के लोहे के औजार का शब्द कभी सुनाई नहीं पड़ा'' (1 राजा 6:7)।

नये नियम में परमेश्वर द्वारा दिया गया नमूना

परमेश्वर अपने लोगों को पालन करने के लिए हमेशा एक नमूना देता है। जिस प्रकार वह सुलैमान के मन्दिर का बनाने वाला था, वैसे ही वह एक और मन्दिर का बनाने वाला भी था जिसे उसने बनाया ''जो सुलैमान से भी बड़ा है'' (मत्ती 12:42)। यीशु ने घोषणा की कि वह एक भौतिक ढांचा या चर्च बिल्डिंग (अर्थात ''आराधना के लिए बनाया गया भवन'') नहीं बल्कि लोगों से बनने वाली एक इमारत बनाएगा, जिसके लिए कहा जाना था कि ''... तुम ... परमेश्वर की रचना हो'' (1 कुरिन्थियों 3:9)। जिस कारण, यीशु का मन्दिर संगमरमर के ''अनमोल पत्थरों'' या ''देवदारु की कड़ियों'' (1 राजा 5:17; 6:10) से नहीं बल्कि ''जीवित पत्थरों'' (1 पतरस 2:5) से बनना था। उस इमारत को बनाने के लिए ''प्रेम'' वह गारा है ''जो सिद्धता का कटिबन्ध है'' (कुलुस्सियों 3:14)।

कितनी अद्भुत ''इमारत'' है! सामूहिक रूप से सब मसीहियों को यह कहने का

सौभाग्य मिला है, ''क्योंकि हम तो जीवते परमेश्वर के मन्दिर हैं; जैसा परमेश्वर ने कहा है कि मैं उन में बसूंगा और उन में चला फिरा करूंगा'' (2 कुरिन्थियों 6:16; देखिए इफिसियों 2:20–22)। पौलुस ने मसीही लोगों को लिखा कि ''परमेश्वर का मन्दिर पवित्र है, और वह तुम हो'' (1 कुरिन्थियों 3:17)।

आश्चर्य की बात है कि मसीही लोग केवल सामूहिक रूप में ही नहीं बल्कि एक-एक करके भी प्रभु का मन्दिर हैं क्योंकि हर मसीही व्यक्ति की शारीरिक देह ''पवित्र आत्मा का मन्दिर है'' (1 कुरिन्थियों 6:19)।

क्या इस अद्भुत इमारत का कोई नक्शा है? जैसे हाबिल के बलिदान, नूह का जहाज़, मूसा का तम्बू और सुलैमान का मन्दिर बनाने के लिए निर्देश स्वर्ग की ओर से मिले थे वैसे ही परमेश्वर के आत्मिक मन्दिर जिसे प्रायः ''कलीसिया'' कहा जाता है, को बनाने के निर्देश भी स्वर्ग से ही मिले थे। वे निर्देश मसीह के प्रेरितों को स्वर्ग से दिए गए थे। मसीहियत के ''आरम्भ'' का पहले से अनुमान लगाकर (ईस्वी 30, प्रेरितों 2:1–47; 11:15), यीशु ने बारह प्रेरितों में कलीसिया के लिए पिता के नमूने की घोषणा कर दी थी: ''मैं तुम से सच कहता हूं, जो कुछ तुम पृथ्वी पर बांधोगे, वह स्वर्ग में बन्धेगा [यू.: *estai dedemena*] और जो कुछ तुम पृथ्वी पर खोलोगे, वह स्वर्ग में खुलेगा [यू.: *estai lelumena*]'' (मत्ती 18:18)।

प्रेरितों द्वारा कुछ भी कहने या लिखने से पहले, जो कुछ भी उन्होंने कहना या लिखना था वह पिता द्वारा स्वर्ग में पवित्र आत्मा से कहा गया था जिसे उसने पिन्तेकुस्त के दिन प्रेरितों पर भेजना था (यूहन्ना 14:26; प्रेरितों 1:8; 2:1–4)। आत्मा ने ''अपनी ओर से'' कुछ नहीं कहना था, बल्कि वही कहना था जो उसने पिता से सुना, ये बातें उसने ''सब सत्य में'' प्रेरितों की अगुआई के लिए ''कहनी'' थीं। (यूहन्ना 16:13)।

प्रेरितों ने ''नई उत्पत्ति'' से ''बारह सिंहासनों'' पर बैठने वाले ''राजदूत'' होना था (मत्ती 19:28)। उन्हें ''जगत के अन्त तक'' ''स्वर्ग'' से ''अधिकार'' मिलना था (मत्ती 18:18; 28:20; 2 कुरिन्थियों 5:20; देखिए 1 थिस्सलुनीकियों 2:6)। 30 ईस्वी के पिन्तेकुस्त के दिन से, मसीह के दूसरी बार आने तक ''सत्य का आत्मा और भ्रम का आत्मा'' (1 यूहन्ना 4:6) में स्पष्ट अन्तर का पता केवल ''प्रेरितों की शिक्षा'' (प्रेरितों 2:42) में अन्तर को देखकर ही चलता है। आज पृथ्वी पर प्रेरितों की शिक्षा केवल नये नियम की सत्ताईस पुस्तकों में मिल सकती है। पिता की इच्छा और बुद्धि से, नया नियम सम्पूर्ण अवस्था में दिया गया है, उसे बदलने की आवश्यकता नहीं है और वही अन्तिम है (2 तीमुथियुस 3:17; 2 पतरस 1:3; गलातियों 1:8, 9; यहूदा 3)।

परमेश्वर द्वारा दिए गए नमूनों को ठुकराया गया

कुछ लोग पहली सदी की कलीसिया को बहाल करने के प्रयास में नये नियम में जाने के विचार का मज़ाक उड़ाते हैं। वे कहते हैं, ''तुम कौन सी कलीसिया बहाल करना चाहते हो? यरूशलेम की, जिसमें सुसमाचार के प्रचार के जोश की कमी थी? या कुरिन्थुस की

कलीसिया को जिसमें इतना व्यभिचार था, और प्रभु भोज के समय कलीसिया की उपासनाओं में लोग मतवाले हो जाते थे?''

नया नियम यह स्पष्ट करता है कि परमेश्वर को ज़्या मंजूर है और उसने पहली सदी की हर कलीसिया में किस बात को स्वीकार नहीं किया था। यह हमें अच्छे और बुरे उदाहरण देता है और इस ढंग से लिखा गया है कि सीधे-सादे और साधारण लोग भी ''भले बुरे में भेद'' कर सकते हैं (इब्रानियों 5:14)।

यद्यपि परमेश्वर ने आरज़्भ से ही मनुष्य जाति को नमूने के अनुसार चलने वाले बनाया था, परन्तु आरज़्भ से ही कैन से लेकर आज तक नमूने को ठुकराने वाले भी मिलते हैं (उत्पज़ि 4:5-9)। बार-बार मनुष्य का घमण्ड उसे स्वर्ग से मिले निर्देशों से फेरता है और वह वही करता है ''जो उसे ठीक सूझ पड़ता'' है (न्यायियों 21:25)। यिर्मयाह ने प्रचार किया था कि ''मनुष्य का मार्ग उसके वश में नहीं है'' कि नाशवान मनुष्य अपने कदमों को दिशा देने में सक्षम नहीं है (यिर्मयाह 10:23)। मनुष्य का अहं बहस करता है, ''मनुष्य सब चीज़ों का माप है।''[1]

प्रेरितों की चेतावनी ''अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न हो'' (रोमियों 12:16) को आम तौर पर नज़रअन्दाज कर दिया जाता है। मनुष्य की अपनी समझ के कारण ही मानववादियों ने लिखा, ''ईश्वरवाद के लिए समय आ पहुंचा है''[2]; ''कोई ईश्वर हमारा उद्धार नहीं करेगा; अपना उद्धार हमें स्वयं ही करना होगा।''[3]

कुछ लोग यह मानने के बावजूद कि परमेश्वर है, मसीह का इन्कार करते हैं। उनका दावा है कि ''उद्धार केवल यीशु के द्वारा ही सज़्भव है'' की बात ''पाखंड'' ही है।

दूसरे लोग, यह दावा तो करते हैं कि परमेश्वर है और उद्धार केवल मसीह के द्वारा ही है, परन्तु सुसमाचार के नमूने को वे कभी नहीं मानते (2 थिस्सलुनीकियों 1:7-9)।[4] एक तथाकथित सुसमाचार प्रचारक ने लिखा है, ''मेरा विश्वास है कि डुबकी न लिए हुए निष्कपट लोगों का सदा के लिए उद्धार'' हो जाएगा।

इसके अलावा, सब नमूनों को ठुकराने वालों का विश्वास है कि किसी का भी नाश नहीं होगा। वे यह सोचकर कि परमेश्वर बहुत भला है और प्रेम करने वाला है जो किसी को भी नरक में नहीं भेजेगा, अपनी आत्मा को खतरे में डालते हैं।

''हे मनुष्य, भला तू कौन है, जो परमेश्वर का सामना करता है'' (रोमियों 9:20)।

सारांश

आज परमेश्वर ने हमारे लिए एक नमूना दिया हुआ है। हमें चाहिए कि उस बच्चे की तरह न बनें जो अपने शिक्षक की बातों पर ध्यान न देकर बिना अर्थ के अस्पष्ट लिखता है। बल्कि उस नमूने की पालना करने वाले बनें जो परमेश्वर हमें देता है। उसकी इच्छा यह है कि किसी का भी नाश न हो बल्कि सब मन फिराएं (2 पतरस 3:9)।

पाद टिप्पणियां

[1]यह कथन पांचवीं शताज़्दी ई.पू. के यूनानी दार्शनिक प्रोटेगोरस का माना जाता है। [2]''ह्यूमनिस्ट मैनिफेस्टो I,'' *द न्यू ह्यूमनिस्ट* (मई/जून 1933); पॉल कट्ज़्ज़, सं. *ह्यूमनिस्ट मैनिफेस्टोज़ 1 एण्ड 2* (बुफेलो, न्यूयॉर्क: प्रोमिथियुस बुज़्स, 1973), 8 में पुनः मुद्रित। [3]''ह्यूमनिस्ट मैनिफेस्टो II,'' *द न्यू ह्यूमनिस्ट* (सितज़्बर/अज़्तूबर 1973); पॉल कट्ज़्ज़, सं. *ह्यूमनिस्ट मैनिफेस्टोज़ 1 एण्ड 2* (बुफेलो, न्यू यॉर्क: प्रोमिथियुस बुज़्स, 1973), 16 में पुनः मुद्रित। [4]रोमियों 6:3, 4 में ''उस उपदेश [अर्थात डॉज़्ट्रिन] के सांचे'' की व्याज़्या के साथ रोमियों 6:17 पढ़ें।